ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

वेद और ईसाई मत

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी प्रकाशन

प्रकाशक - आर्य समाज, अजमेर

मूल्य
५० पैसे

Scanned with CamScanner

प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले द्वारा सम्पादित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला के १५ पुष्प और उनके लेखक

भाग	विषय	लेखक का नाम	मूल्य
1.	ईश्वर एक है, नाम अनेक	प्रो. बुद्धिप्रकाश आर्य	0.60
2.	आदर्श माता पिता	प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु	0.40
3.	शिक्षा और चरित्र निर्माण	प्रो. भूदेव शास्त्री	0.70
4.	गृहस्थाश्रम का महत्व	आचार्य ओंकार मिश्र 'प्रणव'	0.70
5.	सन्यासी कौन और कैसे हो ?	रासासिंह विद्यावाचस्पत्ति	0.40
6.	राज्य व्यवस्था	प्रो. प्रशान्तकुमार वेदालंकार	1.10
7.	ईश्वर और वेद	डॉ. सूर्यदेव शर्मा एम.ए., डी. लिट.	1.00
8.	जगत की उत्पत्ति	डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती	0.70
9.	स्वर्ग और नरक कहां है ?	सिद्धान्त भास्कर पं. यशपाल आर्य बन्धु	0.60
10.	चौके चुल्हे में धर्म नहीं है ?	प्रो. देव शर्मा वेदालंकार	0.60
11.	हिन्दू धर्म की निर्बलता	प्रो. भवानी लालजी भारतीय	0.90
12.	बौद्ध और जैन मत	पं. मंजुनाथ शास्त्री	0.50
13.	इस्लाम और ईसाई मत	श्री रामस्वरूप रक्षक	0.50
14.	इस्लाम और वैदिक धर्म	डॉ. श्रीराम आर्य	0.80
15.	सत्य का अर्थ तथा प्रकाश	प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले	0.50

अन्य प्रकाशन

देश, धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन—

प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले 0.20

नोट:—50 या अधिक प्रतियाँ एक साथ मंगाने पर 25% प्रतिशत कमीशन।

प्राप्ति स्थान

आर्य समाज अंजमेर।

Scanned with CamScanner

॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ माला - भाग १३

वैदिक धर्म और ईसाई मत

लेखक :

श्री रामस्वरूप रक्षक

सम्पादक :

दत्तात्रेय वाब्ले

भूतपूर्व प्रिन्सिपल, दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज

अजमेर

प्रकाशक :

आर्य समाज, अजमेर

Scanned with CamScanner

डॉ. सूर्यदेव शर्मा का प्रशंसनीय अनुदान

आर्य समाज के जाने माने विद्वान और प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री तथा आर्य समाज अजमेर के दीर्घ कालीन यशस्वी मन्त्री डॉ. सूर्यदेव शर्मा शास्त्री साहित्यालंकार ,एम ए, एल टी, डी लिट ने १९८१ में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर इस ग्रन्थ माला के प्रथम संस्करण के लिये १२ हजार रुपये तथा आर्य समाज अजमेर की १९८२ में शताब्दी के उपलक्ष में प्रकाशित इस द्वितीय संस्करण के लिये १० हजार रुपये, इस प्रकार कुल २२ हजार (बाईस हजार रुपये) रुपये की राशि दान में देकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में अनुकरणीय सहयोग दिया है। आर्य-समाज अजमेर और मैं अपनी ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

(दत्तात्रेय वाब्ले)

प्रधान

आर्य समाज: अजमेर

Scanned with CamScanner

प्रस्तावना

मेरठ कालेज के अंग्रेजी के भूतपूर्व प्रोफेसर तथा गढ़वाल राज्य के तत्कालीन चीफ जज श्री गंगा प्रसादजी एम. ए. ने अपनी सुप्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक "दीं फाऊन्टेन हैड आफ रिलीजन" में सब प्रमुख धर्म ग्रन्थों के उद्धरण देकर यह सिद्ध किया है कि सब धर्मों का आदि स्रोत वेद ही है। उनकी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री हरिशंकर शर्मा ने "धर्म का आदि स्रोत"—इस शीर्षक से किया है। उसके प्रथम अध्याय के अनुसार प्रत्येक नवीन मत का पता उससे पुराने मत से और उस पुराने मत का पता उससे अधिक पुराने मत से करने पर स्पष्ट हो जाता है कि वेद सब धर्मों का श्रोत है। प्रायः सब विद्वान एक मत से स्वीकार करते हैं कि वेद से पुराना अन्य कोई धर्म ग्रन्थ नहीं है। लेखक ने इस आधार पर प्रमाण और तर्क सहित यह सिद्ध किया है कि किस प्रकार सबसे नवीन मत इस्लाम, उससे पुराने ईसाई और यहूदी मत के आधार पर तथा ईसाई मत यहूदी और बौद्ध मत के आधार पर और यहूदी मत पारसी अर्थात् जरदुस्ती मत के आधार पर और जरदुस्ती मत और बौध मत वैदिक धर्म के आधार पर स्थापित किये गये हैं। आधुनिक युग में इसी लिये आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द की यह मान्यता रही है कि सब धर्मों का आदि मूल वैदिक धर्म है। उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वर्तमान पौराणिक हिन्दु धर्म सहित सब प्रमुख धर्मों का विवेचन करके यह बताने का प्रयत्न किया है कि इन धर्मों में जो सत्य बातें हैं, वे सब उनके आदि मूल वेद पर आधारित हैं और जो भिन्न या परस्पर विरोधी हैं, वे इन धर्मों के संस्थापकों अथवा उनके अनुयाइयों की मान्यताओं, अथवा सम्बन्धित देश और समाज की विभिन्न परिस्थितियों के कारण उनमें सम्मिलित हो गई हैं। स्वामी दयनान्द एक समर्पित सत्य

Scanned with CamScanner

शोधक और सत्य अन्वेषक थे। धार्मिक क्षेत्र में उनका वही स्थान है जो आज के भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में किसी शोध कर्त्ता विद्वान् का हो सकता है। सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य रहा है जिसके लिये उन्होंने अखण्ड ब्रह्मचारी और बाद में एक आदर्श संन्यासी के रूप में अनेक कष्ट और आक्रमण सहे और अन्त में अपना जीवन तक बलिदान कर दिया।

धार्मिक आक्रमण

19वीं सदी में जब उनका प्रादुर्भाव हुआ उस समय भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ें जमना प्रारम्भ हो चुकी थी, और उसके साथ ही ईसाई मिश्नरियों ने समस्त हिन्दुओं को ईसाई धर्म में दीक्षित करने की भी सुनियोजित योजना बना ली थी। स्वामीजी सबसे प्रथम भारतीय चिन्तक थे जिन्होंने इन राजनैतिक और धार्मिक दोनों आक्रमणों के खतरे को अपनी दूर दृष्टि से पहचान लिया था। इसीलिए कांग्रेस की स्थापना से 10 वर्ष पूर्व उन्होंने विदेशी राज्य का खुला विरोध करके स्वराज्य की स्थापना का सन्देश हमें दिया और साथ ही हिन्दू धर्म और समाज पर निरन्तर आक्षेप और आक्रमण करने वाले ईसाई मिश्नरियों को साहस पूर्वक चुनौती दी। मूर्ति पूजा, जाँत पांत, छुआछुत, स्त्री और शूद्रों पर होने वाले अन्याय आदि हिन्दू समाज के जिन दोषों के कारण ईसाई मिश्नरियों को हिन्दू धर्म और उसके महापुरुषों की निन्दा करने का साहस होता था, उन्होंने स्वयं इन धार्मिक अन्ध विश्वासों और सामाजिक कुरीतियों से हिन्दू समाज को मुक्त करने का संकल्प किया और इस प्रकार ईसाई और इस्लाम धर्म के प्रचारकों के इन परिचित शस्त्रों को बेकार कर दिया। इसके बाद उन्होंने इन आक्रामक धर्मों में प्रचलित अन्ध विश्वासों की भी समीक्षा की, ताकि इन धर्मों के अनुयाइयों को भी यह अनुभव हो कि स्वयं कांच के घर में बैठकर दूसरों पर पत्थर फैकना उनके लिये भी महंगा पड़ सकता हैं। स्वामी दयानन्द की हिन्दू समाज को

Scanned with CamScanner

यह सबसे बड़ी देन है कि उन्होंने उसको अपनी सदियों पुरानी धार्मिक और सामाजिक दुर्बलताओं से मुक्त करके वैदिक धर्म के रूप में एक संगठित और प्रचारक धर्म बनाने का प्रयत्न किया और इस प्रकार इस्लाम और ईसाई आदि संगठित और आक्रामक धर्मों का मुकाबला करने में समर्थ बना दिया। परिणाम स्वरूप आज का हिन्दू समाज न केवल अपने नवीन वैदिक धर्म के रूप में अपनी रक्षा करने में समर्थ है, बल्कि आवश्यकता हुई तो रक्षात्मक आक्रमण करने की भी स्थिति में है। अभी तक हिन्दू अन्य धर्मों के अनुयाइयों को अपने धर्म में दीक्षित नहीं करते थे। आज आर्य समाज के माध्यम से जन्म जात ईसाई और मुसलमान भी वैदिक धर्म में प्रवेश कर सकते हैं। इस प्रकार स्वामीजी ने हिन्दू समाज के द्वार सबके लिये खोलकर उसे वास्तव में एक उदार और विशाल रूप दे दिया है।

धर्मान्तरण का खतरा

इस पुस्तिका में सत्यार्थ प्रकाश के 13वें समुल्लास के आधार पर स्वाध्यायशील विद्वान लेखक श्री रामस्वरूप जी रक्षक ने ईसाई धर्म की कुछ मान्यताओं की जो तर्क पूर्ण समीक्षा की है, उसका मुख्य उद्देश्य भी यही है कि अपने धर्म से अनभिज्ञ हिन्दू ईसाई धर्म प्रचारकों की बातों से गुमराह न होने पावे। अंग्रेजी राज्य समाप्त हो जाने के उपरान्त भी योरोप और अमेरिका से आज भी हिन्दुओं को ईसाई बनाने के लिये करोड़ों रुपया इस देश में भेजा जा रहा है। ईसाई धर्म प्रचारकों ने स्वाधीन भारत की धर्म निर्पेक्षता की नीति का लाभ उठाकर धर्मान्तरण के नवीन तरीके और उपाय अपना लिये हैं। उनकी शिक्षण संस्थाओं, अस्पतालों, आदि सेवा कार्यों का भी मुख्य लक्ष्य, अप्रत्यक्ष रूप से ईसाई धर्म का प्रचार करना ही है। अब उनका मुख्य कार्य क्षेत्र अशिक्षित और अन्य प्रकार से पिछड़े हिन्दू समाज के वे अंग है जो अपनी कठिन परिस्थितियों अथवा हिन्दू समाज के छूतछात जैसे

Scanned with CamScanner

अत्याचारों के कारण धर्म परिवर्तन करने को उद्यत हो जाते हैं। यह परिवर्तन केवल धार्मिक ही नहीं किन्तु सामाजिक और कई दृष्टियों से राष्ट्रीय परिवर्तन भी सिद्ध हो रहा है। भारत के नागा, मिजो आदि उत्तर पूर्वी प्रदेशों में जहाँ आदिवासी व अन्य जातियाँ सामुहिक रूप से ईसाई धर्म में सम्मिलित की गई थी, उनके द्वारा भारत से पृथक् होकर स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करने की माँग इसका प्रमाण है।

इस पुस्तिका में बाइबिल के आधार पर ईसाई धर्म के कुछ सिद्धान्तों का परीक्षण भी यही सिद्ध करने के लिये किया गया है कि वैदिक धर्म के सिद्धान्त उनसे कहीं अधिक तर्क संगत है इसलिये किसी हिन्दू को अपना धर्म और समाज त्याग कर अन्य किसी धर्म में सम्मिलित होने की आवश्यकता नहीं है।

महात्मा ईसा का जीवन :—

ईसाई धर्म में ईसा मसीह का स्थान न केवल एक धर्म संस्थापक का ही है, बल्कि उसके अनुसार ईसा मसीह ईश्वर के एक मात्र पुत्र है, जिन्हें ईश्वर ने पापियों को क्षमा करने का एकाधिकार दे रक्खा है। इस सन्दर्भ से ईसाई मत के अनुसार अन्य सब मनुष्य जन्म से ही पापी और पाप की सन्तान है और यदि उन्होंने ईसामसीह की शरण नहीं ली तो वे सब नरक में भेजे जायेगे। इस प्रकार की अन्य अनेक बातें ईसाई मत में हैं जिन पर आज स्वयं योरोप और अमेरिका के शिक्षित लोग भी विश्वास नहीं करते। उदाहरण के लिये ईसामसीह के जन्म सम्बन्धी 'इमाक्यूलेट' उत्पत्ति के सिद्धान्त को वहाँ के पादरियों तक ने अस्वीकार कर दिया है। किन्तु हमें यह स्वीकार करने में भी संकोच नहीं करना चाहिये कि ईसा-मसीह का जन्म चाहे जैसे हुआ हो उनका वास्तविक महत्व उनके अपने जीवन और चरित्र से आंका जाना चाहिये। उनके व्यक्तिगत गुणों के कारण ही आज उनकी गिनती संसार के महापुरुषों में है। अनेक घटनाओं से स्पष्ट है कि वे आत्मविनम्रता, शुद्धता, क्षमाशीलता, शान्ति, सहिष्णुता

Scanned with CamScanner

और मनुष्य मात्र से प्रेम के उन आदर्शों का स्वयं अपने जीवन में पालन करने का प्रयत्न करते रहे जिनका वेद भी उपदेश देते हैं। ईसाई धर्म के दार्शनिक तथा सृष्टि उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त दोषपूर्ण होने के बावजूद ईसाई धर्म का जो इतना व्यापक प्रचार है इसका कारण उनके मन्तव्यों या मान्यताओं की श्रेष्ठता न होकर मुख्य रूप से पाश्चात्य देशों का साम्राज्य विस्तार तथा महात्मा ईसा के उपरोक्त गुण और उनके आधार पर ईसाई धर्म के प्रचारकों द्वारा किये जाने वाले सेवा कार्य है। हमें इससे भी शिक्षा लेकर यह प्रयत्न करना चाहिये कि वैदिक धर्म के प्रचार में भी हम केवल उसकी सैद्धान्तिक श्रेष्ठता पर ही निर्भर न रहें बल्कि ऋषि दयानन्द द्वारा संसार के उपकार करने और सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझने के उपदेशों का भी अनुसरण करें। ऋषि दयानन्द का जीवन बलिदान, त्याग, तपस्या और आदर्श चरित्र भी हमारे लिये उसी प्रकार प्रेरणा का स्रोत होना चाहिये जैसा ईसाई प्रचारको के लिए ईसा मसीह का।

सम्पादक

लेखक का परिचय—श्री रामस्वरुप जी रक्षक एक स्वाध्यायशील और निष्ठावान युवक हैं। प्रचार कार्य के अतिरिक्त सिद्धान्त सम्बन्धी लेख और व्याख्यान उनकी विशेषता है। वे वैदिक ज्योति नामक मासिक पत्रिका के सम्पादक भी हैं।

Scanned with CamScanner

॥ ओ३म् ॥

वैदिक धर्म और ईसाई मत

ईसाई मत के सिद्धान्त

ईसाई मत जीसस या ईसा मसीह के नाम से प्रचलित है। उन्हें क्राईस्ट भी कहते हैं। इस लिए उन के नाम से चलाए गए धर्म के अनुयायी क्रिश्चन या ख्रिस्ती कहलाते हैं। उन के धर्म के अधिकांश विश्वास इतने तर्क विरुद्ध और समझ में न आने योग्य हैं कि स्वयं यूरोप और अमेरिका के बहुत से बुद्धिमान लोग भी उन्हें स्वीकार नहीं करते। इसलिए आजकल ईसाई पादरी और प्रचारक इन देशों से पैसा लाकर अफ्रीका और एशिया के बेपढे लिखे गरीब और पिछडे लोगों को ही ज्यादातार ईसाई बनाने का प्रयत्न करते हैं। ईसाई मिशनरियों द्वारा अस्पताल स्कूल आदि खोलने के पीछे भी उनका उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार करना होता है। इसी लिए महात्मा गांधी जैसे ईसा मसीह के प्रशंसक भी ईसाइयों द्वारा हिन्दुओं को ईसाई बनाने का विरोध करते थे। यद्यपि वे उनकी सेवा कार्य की प्रशंसा करते थे। उनका कहना था कि दुःखी और पीडित लोगों की सहायता के बदले उन से उन के धर्मजैसी बडी कीमत वसूल करना सेवाभाव के उद्देश्य को नष्ट करना है।

जन्म से पापी क्यों ?

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास

Scanned with CamScanner

में ईसाई मत का विवेचन किया है। उस से स्पष्ट होगा कि बौद्धिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मानव और सृष्टि की उत्पत्ति के बारे में ईसाइयों के अनेक सिद्धान्त गलत सिद्ध हुए हैं। धर्म के क्षेत्र में उनकी अनेक विचित्र मान्यताएँ हैं। उदाहरण के लिए उनका कहना है कि सब मनुष्य जन्म से ही पाप की सन्तान हैं। सन्तानोत्पत्ति ईश्वर की सृष्टि का नियम है। यदि ईश्वर की निगाह में वह पाप है तो उस पाप के लिए स्वयं ईश्वर उत्तरदायी समझा जावेगा। ईसाई पुनर्जन्म और कर्म के सिद्धान्त को भी नहीं मानते। फिर जन्म से बच्चे के सिर पर किस अपराध के लिए पाप का यह बोझा डाला गया और यदि बड़ा होने पर वह एक सदाचारी और धर्मात्मा व्यक्ति बनता है तो फिर उसे नरक में क्यों भेजा जायेगा। ईसाइयों के अनुसार इस जन्मगत पाप से छुटने का एक ही उपाय है और वह यह कि ऐसे सब पापी ईसा मसीह पर विश्वास व्यक्त करें। उन का कहना है कि ईश्वर ने ईसा मसीह को ही अपना एकमात्र पुत्र घोषित करके उसे यह ठेका एकाधिकार दिया है कि वह मनुष्यों के पापों को क्षमा करे। ऐसा लगता है कि ईसाई धर्म की यह कल्पना सिर्फ लोगों को नरक और पाप का भय दिखा कर अपने धर्म में शामिल करना मात्र है। पहले बिना कर्मों या अपराध के पापी होने का भय और बाद में उससे छुटने के लिए ईसाई मत स्वीकार करने का प्रलोभन और ऐसा न करने पर नरक का डर।

रोगियों का इलाज

ईसाई पादरी इस गोरख धन्धे का जो जवाब देते हैं वह और भी विचित्र है। उनका कहना है कि यदि मनुष्य जन्म से पापी न हो या संसार में अन्धे, लगंड़े, कोढी और रोगी न हों तो फिर ईसा मसीह को ईश्वर ने पाप क्षमा करने का जो अधिकार दिया है और रोगियों और अपाहिजों को चंगा करने का अवसर दिया है

Scanned with CamScanner

वह कैसे सफल होता ? इस तर्क के अनुसार तो यह सिद्ध होता है कि ईश्वर ने मनुष्य पर यह सब अभिशाप इस लिए थापे हैं कि चमत्कार के नाम से प्रभावित हों। यदि केवल ईसा मसीह पर विश्वास करने से रोगी अच्छे हो सकते हैं तो ईसाई देशो में अस्पतालों की क्या जरुरत ? वहां के मरीज़ और डॉक्टर दोनों ही ईसाई धर्म को मानते हैं। फिर आप्रेशन या दवाइयों आदि की क्या आवश्यकता है ?

ईसाई मत की अन्य असंगत बातों का परिचय आपको इस पुस्तिका से मिलेगा जो सत्यार्थप्रकाश के तेरहवें समुल्लास के आधार पर लिखी गई है।

असत्य और अविद्या

आर्यसमाज के चौथे नियम में 'असत्य के त्याग' तथा आठवें नियम में 'अविद्या के नाश' का संकेत है। असत्य और अविद्या परस्पर सम्बन्धित है। असत्य के लिये साधन है छल तथा अविद्या के लिए साधन है भ्रम। आर्यावर्त्त (भारत वर्ष-हिन्द-इण्डिया) ही नहीं पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों में मत-सम्प्रदायों के जोउपदेशक (कथित संन्यासी आदि) है छल रूपी अस्त्र को काम में लाकर जनसाधारण को भ्रमित करते रहते हैं, जिसके परिणाम स्वरूप जो श्रमनिष्ठ वर्ग है उसका शोषण होता ही रहता है। छल के साथ में मन तथा लोभ आदि भी ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा भ्रान्ति को निरन्तर पुष्ट किया जाता है तथा जनसाधारण अन्याय व अभाव की पीड़ायें भी झेलता रहे। लगभग 2000 वर्ष पूर्व एशिया व यूरोप के संगम क्षेत्र में जीसस ख्रीष्ट के प्रयत्नों से उस क्षेत्र में विशेष परिवर्तन होने लगा था, उनके शिष्यों ने क्रिश्चियन या ईसाई मत को आरम्भ किया। इस समय में अधिकांश देशों में ईसाई मत है, क्रश्चीन मतानुयायी हैं। इस मत

Scanned with CamScanner

में भारतवर्ष के पौराणिक मत की भाँति अनेक सम्प्रदाय हैं। पौराणिक मत के सम्प्रदायों में परस्पर रक्तपात की स्थिति नहीं के बराबर हुई है। परन्तु ईसाई मत के सम्प्रदायों में परस्पर भयंकर रक्तपात हुए हैं। पारस्परिक रक्तपात में ईसाई युद्ध कर्त्ताओं ने महिला व बाल वर्ग को भी शिकार बनाया है। अभी जो ईसाइयत फैल रही है उसमें छल एवं भय की अपेक्षा लोभ का इस्तेमाल अधिक है।

ईसाइयत का प्रेरणा ग्रन्थ बाइबल कहलाता है। ईसा के पहले के प्रेरणा ग्रन्थ तौरेत जबूर आदि है। तौरेत से सम्बन्धित उत्पत्ति-यात्रा-लैव्य व्यवस्था-गिनती से भुएल-राजाओं के पुस्तकों तथा जबूर सम्बन्धी ऐयूब-उपदेश आदि पुस्तकों के उद्धरणों का नीर क्षीर सत्यार्थ प्रकाश के तेरहवें समुल्लास में किया गया है। तथा बाइबल जो ईसा सम्बन्धित है विशेष रूप से उसके मत्ती-मार्क-लूक रचित इंजील योहन कृत सुसमाचार-प्रकाशित वाक्यों से उद्धृत अंशों पर नीर क्षीर विवेक प्रस्तुत किया है ऋषि दयानन्द ने। मूल ग्रन्थ तो हिब्रू भाषा में है, जिसका अंग्रेजी अनुवाद अनेक देशों में भी उपलब्ध है। भारत में हिन्दी आदि वर्तमान मातृ भाषाओं में उपलब्ध होता है। ऋषि ने जो समीक्षा की है उसमें सारे उद्धरण उनके समय में उपलब्ध हिन्दी बाइबल के हैं। उस समय से लेकर अब तक हिन्दी अनुवाद में परिवर्तन हुये हैं। इन परिवर्तनों में अपेक्षित सुधार भी हुआ है। जिससे पता चलता है कि बुद्धि का सदुपयोग बाइबल के हिन्दी अनुवादकों ने किया है। ऋषि दयानन्द के समय "मजहब में अकल का दखल नहीं" परन्तु ऋषि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत समीक्षा के बाद विभिन्न प्रेरणा ग्रन्थों के अनुवादक बुद्धि विनियोग करने लगे। याने मत सम्प्रदायों में जो जड़ता चल रही थी उसकी जगह कुछ-कुछ चेतना जागृत होने लगी।

Scanned with CamScanner

सृष्टि के बारे में अज्ञान

ऋषि ने तेरहवें समुल्लास में सबसे पहले तौरेत उत्पत्ति पुस्तक--पर्व 1 आयत1, 2 को उद्धृत किया, जिसका तात्पर्य है कि आरम्भ में ईश्वर ने आकाश पृथ्वी कोसृजा, पृथ्वी बेडौल सूनी थी, गहराव पर अंधियारा था, ईश्वर आत्मा जल के ऊपर डालता था। इसकी समीक्षा में ऋषि ने जो चिन्तन प्रस्तुत किया उसका आशय यह है कि वर्तमान सृष्टि प्रथम नहीं है। ईसाइयत आकाश को पोला व ऊपर मानती है। ऋषि की मान्यता है कि आकाश विभु पदार्थ है अति सूक्ष्म है और नीचे ऊपर एक जैसा है। आकाश के बिना अवकाश नहीं, तब पदार्थ स्थित नहीं हो सकते। ईश्वर सर्वज्ञ है सो उसका कार्य बेडोल नहीं हो सकता। पृथ्वी में जो ऊंचा नीचा या अन्य है वह पृथ्वी रचना की विशेषता है। ईश्वर का आत्मा ईश्वर एक देशीय नहीं है, वह निराकार है एवं व्यापक है अत. जल ही क्या आकाश से सूक्ष्म जो जीवात्मा है उससे भी अधिक सूक्ष्म ईश्वर है उसका जल पर डोलने का प्रश्न हो नहीं। ऋषि संकेत करते हैं कि जो (ईश्वर) विभु नहीं तो जगत् की रचना-धारण-पालन और जीवों के कर्मों की व्यवस्था व प्रलय कभी नहीं कर सकता; जिस पदार्थ का स्वरूप एक देशी है, उसके गुण कर्म स्वभाव भी एक देशी होते हैं। जो ऐसा है तो वह ईश्वर नहीं हो सकता, ईश्वर सर्व व्यापक-अनन्त गुण कर्म स्वभाव युक्त सच्चिदानन्द स्वरूप-नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव-अनादि-अनन्त आदि लक्षण-युक्त वेदों में कहा है, उसो को मानो तो तुम्हारा कल्याण होगा अन्यथा नहीं।

बिना सूर्य के दिन रात

तोरेत उत्पत्ति-पर्व 1-आ. 6-8 की समीक्षा में बताया ऋषि

Scanned with CamScanner

ने कि जो आकाश को स्वर्ग कहा तो वह सर्व व्यापक है, इसलिए सर्वत्र स्वर्ग हुआ, फिर ऊपर को स्वर्ग है यह कहना व्यर्थ है; जब सूर्य उत्पन्न ही नहीं हुआ था तो पुनः दिन और रात कहाँ से हो गई ? तात्पर्य यह कि सृष्टि उत्पत्ति में अनुमान प्रमाण की सतर्कता यहां नहीं झलकती है। वैदिक साहित्य में द्युलोक को स्वलोक भी कहा जाता है, स्वलोक ही स्वर्ग है। बाइबल कार ने द्यु एवं आकाश को एक समझ कर आकाश को सूर्य बता दिया।

एक पसली की नारी

तौ. 3. 4 2/आ 21-22 का तात्पर्य यह है कि बाइबल वर्णित ईश्वर ने नर (आदमी) की पसली नारी बनाई। ऋषि की समीक्षा है कि जो आदम की एक पसली निकाल कर नारी बनाई तो सब मनुष्यों की एक पसली कम क्यों नहीं होती ? और स्त्री शरीर में एक पसली होनी चाहिए....क्या जिस सामग्री से सब जगत् बनाया उस सामग्री से स्त्री का शरीर नहीं बन सकता था ? तात्पर्य यह कि आदम को बाईबल वर्णित ईश्वर ने धूल से बनाया तो धूल से नारी शरीर भी बन सकता था। परन्तु बाइबल ने इस प्रकार भ्रम के साथ नारी स्वयं को हेय समझे यह भ्रांति भी साथ ही फैला दी। यह क्यों नहीं कह दिया गया कि नारी की एक पसली से नर बना। बाइबल से पीड़ित करने की शक्ति नर में अधिक है, बाकी और सब बातों में तो नारी अधिक शक्ति मान है। मानव को उन्नत करने वाली विशेषतायें हैं वे भी नारी में ही अधिक मात्रा में होती हैं।

शैतान सच्चा या ईश्वर ?

तौ. 3. 4. 3/आ 1-7, 14-18 में सर्प की प्रेरणा से (हव्वा) नारी द्वारा फल खाने व नर को भी फल खिलाने की गाथा है,

Scanned with CamScanner

जिसक कारण नारी नर को शारीरिक नग्नता का बोध होता हैं। इस गाथा में यह भ्रान्त धारणा भी हैं कि नर प्रभुता करेगा। ऋषि की समीक्षा का आशय यह है कि बाइबल वर्णित ईश्वर ने धूर्त सर्प या शैतान-ज्ञानदाता पेड़ आदि बनाये। कथित शैतान ने सच बताया, तथा ईश्वर ने झूठ कहा अर्थात् बाइबल वाला ईश्वर ही छली कपटी हो गया। तथा आदम का भी अपराध सिद्ध नहीं होता। इस गाथा में भी नारी में हीनता का भाव भरने की बात हैं।

माँसाहारी ईश्वर

तौ. 3. 4. 4/आ 3-6 में बताया गया हैं कि बाइबिल वाले ईश्वर ने छवील से भेड़ को भेंट में स्वीकारा, जबकि काइन भूमि के फल लाया भेंट में उसका आदर नहीं किया। ऋषि समीक्षा का आशय है कि कथित ईश्वर मांसाहारी हुआ न कि शाकाहारी। तो ऐसे ईश्वर के अनुयायी बनने से अन्यों के प्राणहरण की प्रवृत्ति पनपेगी। ऐसा हिंसक कर्म मानवीय भी नहीं हैं, विवेकी-अहिंसक मनुष्य माँसाहार व अन्य दुष्कर्म नहीं करते। रही बात ईश्वर की वह हमेशा निराकार है। ईसाइयत (व अन्य मतों) में ईश्वर का जो जो चित्रण है उससे सद्कर्म प्रवृत्ति की प्रेरणा नहीं मिलती है। मत विशेष के उपदेशों आदि में जो दोष होते हैं, उन्हें ही उनके ईश्वर पर मढ़ दिया जाता है। जैसे पुराणों के कृष्ण को चोर जार शिरोमणि बताया गया है।

क्या ईश्वर अज्ञानी है ?

इसी आयत में यह भी है कि आदम की दुष्टता से कथित ईश्वर पछताया ओर विभिन्न प्राणियों को नष्ट करना तय किया। ऐसी गाथाओं से स्पष्ट होता है कि बाइबल ईश्वरीय ज्ञान नहीं। ऋषि की समीक्षा है कि वह ईश्वर ही नहीं जो सर्वज्ञ न हो, न

Scanned with CamScanner

भविष्य की बात जाने, वह जीव है, क्या जब सृष्टि की थी तब आगे मनुष्य दुष्ट होंगे ऐसा नहीं जानता था ? जो वेदोक्त परमेश्वर सब पाप क्लेश दुःख शोक आदि से रहित सच्चिदानन्द स्वरूप है, उसको ईसाई मानते या अब भी माने तो अपने मनुष्य जन्म को सफल कर सकें ।

ईश्वर रक्षक या भक्षक

तो. 3 4. 9/आ. 1,6,4 में बताया गया है कि नूह के पुत्रों को ईश्वर ने कहा कि हर प्राणी तुम्हारा भोजन है ऋषि समीक्षा है कि ईश्वर के लिए सब प्राणि पुत्रवत् हैं, ऐसा न होने से इनका (ईसाई) ईश्वर प्राणियों का रक्षक न होकर उनको हिंसा का समर्थक समझा जायगा। ईसाइयों में अधिकतर लोग प्राणी वर्ग का मांस खाते हैं, ऐसा करना उचित समझते हैं ये लोग। इस प्रकार का कुसंस्कार जो है उसका आधार ऐसी गाथायें हैं। इसी को आ. 1.4.8 में बताता है कि पृथ्वी के सब मनुष्यों की एक भाषा थी। बाइबल वर्णित ईश्वर ने गड़बड़ कराई तथा एक भाषा न रही। ऋषि समीक्षा का आशय है एक भाषा होने से मनुष्य परस्पर सम्वाद कर सकते हैं, जिसका अपना सुख है। परस्पर भाषा का नहीं समझ पाना दुखदायी होता है। फिर कथित ईश्वर ने विग्रह कराने का कार्य क्यों किया ? आदि में मनुष्यों की एक भाषा रही इसमें बाइबल भी प्रमाण है। ऋषि की मान्यता है कि आरम्भ में सब मनुष्यों की भाषा एक थी, इसको पुष्टि होती है। स्व. पं. भगवत दत्त जी वैदिक वांङ्मय का इतिहास भाग 1 पृष्ठ 1-40 संस्करण 2 में लिखते हैं कि यह सत्य तत्त्व आर्यों के द्वारा ही यहूदियों तक पहुंचा था। यह एक भाषा वेद के आधार पर निष्पन्न आर्यभाषा या आदि भाषा संस्कृत थी।

Scanned with CamScanner

शराब के दोष

तौ 3, 4. 19/आ. 32-34, 36 में गाथा है कि लून नामक पिता ने मद्यपान कर स्वपुत्रियों को अंक शायिनी बनाया। ऋषि समीक्षा है कि पिता पुत्री भी जिस मद्यपान के नशे में कुकर्म करने से न बच सके-इसलिए सज्जन लोगों को मद्य के पीने का नाम भी न लेना चाहिए।

तौ. 3.4. 26/आ. 6में निष्प्राण मनुष्य शरीर यानी मुर्दे को भूमि में गाड़ने का संकेत है। ऋषि समीक्षा का आशय है कि मृतक से प्रीति नहीं हो सकती प्रीति तो जीवात्मा से थी सो वह निकल गया। सन्दूक में शव गाढ़ने से दुर्गन्ध द्वारा दारूण रोगोत्पत्ति होती हैं, जमीन व्यर्थ जाती है, उत्पादक कार्य खेती बागवानी आदि नहीं हो पाने, न आवास की सुविधा मिलती है। जल में डालना इससे कम बुरा है, जंगल में छोड़ना और कम बुरा है। मृतक को जलादेना ही सबसे अच्छा विकल्प है। विधि विरुद्ध जलाने से कुछ दुर्गन्ध हो सकती है, परन्तु विधि अनुकल दाह करने याने ऋषि दयानन्द कृत संस्कार विधि के अन्त्येष्टि कर्म करने से दूषण से बचा जा सकता है। गाड़ने आदि से तो दूषण बढ़ता जाता है। इस अन्त्येष्टि संस्कार को ही वे नरमेध-पुरुषमेध यज्ञ कहते हैं। अतः ईसाई उपदेशकों के साथ निरन्तर सम्वाद करते रहे धर्माथ, उनका मानस ऐसा बने कि ईसाई मतानुयायी भी मुर्दों को जलाया करें।

पिता का दण्ड पुत्र को ?

तौ. या. 4.20/आ. 5 में पितरों के अपराध का दण्ड पुत्रों-पौत्रों-प्रपौत्रों याने चौथी पीढ़ी तक देने का संकेत है। ऋषि समीक्षा है कि क्या अच्छे पिता के दुष्ट और दुष्ट पिता के अच्छे सन्तान नहीं होते—बिना अपराध किसी को दण्ड देना अन्याय-

Scanned with CamScanner

कारो की बात है। राज्य व्यवस्था के प्रमाद से कोई अपराधी दण्ड से बच जाये तो चलेगा, वैसे अपराधी को दण्ड मिलना ही उसकी पूजा-सत्कार है. आर्यसमाज के सातवें नियम में इसीलिए यथा योग्य व्यवहार करने का संकेत है। परन्तु किसी निरपराध को तो दण्ड कभी न मिलना चाहिए।

तौ. या, 4.24/आ. 5,6,12, में परमेश्वर के लिए लहू चढ़ाने का वर्णन है, मूसा ने आधा लहू वेदी पर छिड़का तथा लोगों पर छिड़का आदि लिखा है। जो वास्तविक ईश्वर है वह तो किसी प्राणी का बलिदान आहुति आदि नहीं चाहता। भ्रांति निवारण हेतु बताते हैं ऋषि कि ऐसी बुरी बातें बाइबल में भरी हैं, इसी के कुसंस्कारों से वेदों में भी ऐसा झूंठा दोष लगाना चाहते हैं, परन्तु वेदों में ऐसा बातों का नाम भी नहीं।

ईश्वर के लिए रक्त

तौ.ले.य. व्यवस्था प 1/आ. 1,2 आदि में ईश्वर के लिए पशुओं के प्राण हरण का निर्देश है। वस्तुत: ईश्वर निराकार है अत: वह भोजन करता ही नहीं। जो मनुष्य सब प्राणियों को अपनी भाँति स्नेह करता है वह प्राणहरण आदि का कार्य कर ही नहीं सकता। परमेश्वर तो सब प्राणियों के लिए ही पिता तुल्य है। धर्म ग्रन्थ जो माने जाते हैं उनमें ऐसे प्राणहरणों से मनुष्य को निर्दय बनने की प्रेरणा मिलती है।

जबूर 2 काल समाचार 1 पुस्तक/पर्व 21/ आयत 14 में बताया गया कि बाइबल वर्णित ईश्वर ने सत्तर हजार मनुष्यों के प्राणहरे। भ्रांति निवारण हेतु बताते हैं ऋषि कि कोई मनुष्यक्षण में प्रस न क्षण में अप्रसन्न होवे उसकी प्रसन्नता भी भयदायक होती है। कथित ईश्वर का जो चरित्रचित्रण है बाइबल में वह किसी विक्षिप्तचित्त व्यक्ति का सा विवरण लगता है। विक्षिप्त-

Scanned with CamScanner

चित्त क्योंकि एकाग्र नहीं होता, अतः क्षण क्षण में वह उलटपुलट करता रहता है। जब प्रेरणा स्रोत ही एकाग्र चित्त न हो तो उपदेशक व अनुयायीजनों का क्या हाल होगा ?

शैतान बड़ा या ईश्वर ?

ज. ऐयुब 42/आ 1-7 में विवरण है कि शैतान ने कथित ईश्वर के अनुयायी ऐयूब को यातना दी पर ईश्वर कुछ न कर सका। ऐसे कथानकों से जो सदाचारी व्यक्ति हैं उनका मनोबल कम होता है। वेदानुसार ईश्वर सर्वशक्तिमान् है, जो व्यक्ति यह मान्यता रखता है उसमें दृढ़ मनोबल होता है, परिणाम स्वरूप वह हंसते खेलते बड़े बड़े संकटों को पार कर जाता है।

कँवारी का पुत्र

पुराना नियम यहूदियों में मान्य है जब कि नया नियम (इंजील) ईसाईयों में मान्य है, यह जीसस क्रोस्ट (यीशु मसीह-ईसा) से सम्बन्धित है। यूसुफ से मरियम का वाग्दान हुआ था। मरियम यूसफ से एकाकार न हो पाई थी फिर भी उसके गर्भ रहा। यह गर्भ पवित्रात्मा से रहा यह भ्रांति पूर्ण गाथा है इंजील मतीरचित पर्व 1/आयत 18-20 में। यह तो पूर्णतः निश्चित है कि अविवाहित कन्या गर्भिणी है तो अवश्य ही वह किसी अविवाहित या विवाहित पुरुष गमन के परिणाम से सगर्भा हुई है। कोई आत्मा स्थूल शरीर के अभाव में गर्भ धारण नहीं करा सकता। कुमारी नहीं रही तभी तो गर्भवती हुई अतः अविवाहित मरियम किसी अकुमार पुरुष के षड़यन्त्र का शिकार हो गई होगी।

ऋषि की समीक्षा है कि भला जो परमेश्वर नियम है उसको कोई तोड़ सकता है ! .. जैसा यह असम्भव प्रपंच रचा गया है वैसे ही सूर्य से कुन्ती का गर्भवती होना भी पुराणों में असम्भव

Scanned with CamScanner

लिखा है। इस प्रकार से ही पुराणों में भी अनेक भ्रमित गाथायें हैं, पौराणिक व ईसाई गाथाओं में क्या सम्बन्ध है इस विषय पर भी विद्वानों द्वारा शोध होना चाहिए। महाभारत में प्रक्षिप्त प्रकरण काफी हैं, इस प्रक्षेप अंश से इंजील आदि की कई गाथायें मिलती जुलती देखने में आ सकती हैं।

असत्य के त्याग के लिए, भ्रमोच्छेदन-भ्रांतिनिवारण आवश्यक है अतः सब देशों के विभिन्न मतों में जो भोले लोग हैं वे नहीं फंसे यह उपक्रम धर्माचार्यों द्वारा आर्यसमाज कराता रहे। विभिन्न देशों में सम्बन्धी मत परिवर्तन यदि सर्वेक्षण कराया जावे तो पता चलेगा कि विभिन्न मतों से जो लोग ईसाई बने हैं उनमें मुख्य उपाय छल है लोभ है। विवेक व सदाचार की प्रेरणा से ईसाइयत में नहीं आते हैं लोग भोले, होने से छले जाते हैं। मसीही उपदेश ही नहीं अन्य भी अनेक मत वाले उपदेशक छल आदि से ही प्रयोजन सिद्ध करते हैं। इसी को आयत 23-24 में भूत निकालने आदि का संकेत है। भूत संज्ञा मृतक व्यक्ति की होती है।

इं. य. प. 6/आ. 11-19 में दिन भर रोटी आन मिले यह प्रार्थना अनुयायियों द्वारा की गई है। रोटी-कपड़ा-मकान आदि की जो समस्या है वह विवेक होनता के परिणाम से है। वेद के ब्रह्मगायत्री मन्त्र में बुद्धि के सन्मार्ग पर चलने की प्रार्थना है। विवेक है तो सब ठीक हो गया समझो, परन्तु बुद्धि, भ्रष्ट हो गई तो सर्वनाश के अतिरिक्त होगा भी क्या? अतः प्रार्थना रोटी के बजाय विवेक के लिए है।

असम्भव बातें

इसी के प. आ. 2,3 में गाथा है कोढ़ी का शुद्ध होने का सम्बोधन किया ईसा ने, और कोढ़ तुरन्त शुद्ध हो गया। पुराणों में

Scanned with CamScanner

बृहस्पति—कश्यप आदि सम्बन्धी कई असम्भव कथानक हैं, भ्रम इंजील में हो या पुराण में है तो भ्रम ही, अन्य ऐसे सब भ्रमों का निरसन धर्माचार्यों द्वारा होता रहे। इसी की आयतों 28-29, 31-32 में भूत ग्रस्त मनुष्य कब्रिस्थान में से निकले यह संकेत है। यह भी सृष्टि नियम विरुद्ध है मृतक शरीर का दाह कर दिया तो उसकी संज्ञा भूत हुई, अब उसका सप्राण शरीर लौटना सृष्टि नियम विरुद्ध असम्भव है। इस संदर्भ में एक वाक्य है ऋषि का, कि क्या आजकल के सुशिक्षित ईसाई अंग्रेज लोग इन गपोड़ों को भी मानते होंगे।

अंग्रेज आदि भले स्वयं बाईबल की भ्रम युक्त गाथाओं में विश्वास नहीं करते थे परन्तु प्रचार कराते थे बाइबल क्या है? याने पराधीनता की बेड़ी दृढ़ रखने के लिये ईसाईयत प्रचार का इस्तेमाल किया जाता रहा। ऋषि ने जब मिथ्या मसीही मन्तव्यों का नीर क्षीर आरम्भ किया तो उसके परिणाम से आर्यसमाज की शक्ति देश की पराधीनता दूर करने में भी लगने लगी।

कर्मफल और क्षमा

ह. म. 4.16/आ. 27 में सकेत है कि मनुष्य को उसके कर्मानुसार फ़ल मिलेगा। ऋषि समीक्षा हैं कि जब कर्मानुसार फल दिया जायेगा तो ईसाइयों का पाप क्षमा होने का उपदेश व्यर्थ है। जैसे यह सिद्धान्त वेदानुकल है, वैसे ही जो-जो भी वेदानुकूल भाग है बाइबल का, उसका संग्रह करके प्रकाशित किया जाना चाहिए।

स्वर्ग की विचित्र कल्पना

इसी के प. 19/आ. 3.24 में बताया गया कि धनवानो का स्वर्ग प्रवेश कठिन है। समीक्षा है ऋषि को धनाढयों और दरिद्रों में अच्छे बुरे होते हैं, जो कोई अच्छा काम करे वह अच्छा

Scanned with CamScanner

औरजो बुरा करे वह बुरा फल पाता है। उपदेश तो यह होना चाहिए कि जो दुराचारी है उसका प्रवेश स्वर्ग में असम्भव है। फिर भी यह स्पष्ट करना चाहिए था कि स्वर्ग कोई स्थान विशेष नहीं है, कि मनुष्य के लिये अनुकूल मनोस्थिति-परिस्थिति ही स्वर्ग है। आगे ही आयत 28-29 में यह भ्रम है कि जिस किसी ने मेरे (ईसा) नाम के लिए घरों वा भाईयों वा बहिनों वा माता वा पिता वा स्त्रियों वा लड़कों वा भूमि को त्यागा है वह (अनुयायी पुरुष) सौ गुणा पावेगा। यह वाक्य पुरुष वर्चस्व को बताता है कर्म फल सुख दुःख रूप में प्राप्त होता है न कि सौ स्त्रियों आदि के रूप में। फिर स्त्री अनुयायियों को संकेत करते हुये यह क्यों नहीं कहा गया कि सौ गुणे पुरुष (पति) उन्हें मिलेंगे। एक पुरुष को 100 स्त्री मिलने का मतलब है कि एक स्त्री से एकाकार होते ही वह पुरुष तो अकुमार हो गया। अब 99 स्त्रियों को अन्याय सहन करना होगा। वे हैं तो कुमारियां परन्तु प्रथम ही अकुमार संगम करना होगा। विभिन्न मत ग्रन्थों में ऐसे वाक्य मिलते हैं जिससे स्त्री का दर्जा भोक्ता का न होकर भोग साधन सा लगता है। एक-एक के साथ में स्त्री पुरुष पत्नी-पति रूप में परस्पर भोक्ता भी है तथा परस्पर भोग्य भी हैं, एक के अतिरिक्त अन्य स्त्री पुरुष भगिनी-भ्राता, माता-पिता, पुत्री-पुत्र तुल्य हैं, याने यौनाचार निरपेक्ष है। गुरु शिष्य सम्बन्ध भी यौन निरपेक्ष है, शिष्या भोग साधन नहीं है गुरु के लिए। किसी महिला गुरु का भोग साधन नहीं है शिष्य।

इ. म. 424/आ 35 में आकाश पृथ्वी के चलने का संकेत है। आकाश अति सूक्ष्म होने से अदर्शनीय है, अतः इसके हिलने की बात ही नहीं, यह विद्या से विरुद्ध है, ऐसी भ्रांतियों को मानने से अनुयायियों के विवेक में कमी होती है। तथा विवेकहीनता

से ही मनुष्य पशुवत् बनजाता है। अतः प्रेरक ग्रन्थों में जो वाक्य हैं वे ऐसे हों कि अनुयायियों को भ्रांति ही न रहने पावे।

ईसा को फांसी अनुचित

इसके ही पर्व 26/आ 53 की समीक्षा में ऋषि बताते हैं कि जिन्होंने ईसा पर झूठा दोष लगाकर मारा उनको भी उचित न था. ईसा का उस प्रकार का अपराध नहीं था जैसा उसके (ईसा के) विषय में उन्होंने (ईसा विरोधियों ने) किया। परन्तु वे भी तो जंगली थे, न्याय की बातों को क्या समझें? यदि ईसा झूंठमूठ ईश्वर का बेटा न बनता ओर वे (ईसा विरोधी) उसके साथ ऐसी बुराई न बर्तते तो दानों के लिए उत्तम काम था। ऋषि समीक्षा का तात्पर्य यह है कि यीशु मसीह ने अपने आपको ईश्वर के लिए पुत्र घोषित करके ठीक न किया। प्रत्येक जीवात्मा, ईश्वर के लिए पुत्र तुल्य है यदि ईसा पुत्र है ईश्वर का तो ईसाई अनुयायी भी उतने ही ईश्वर पुत्र हैं जितने कि ईसा! तो जो मनुष्य ईसा व ईसाई नहीं हैं वे सब भी ईश्वर पुत्र हैं जितने कि ईसा व ईसाई। इतना ही नहीं जो जीवात्मा मनुष्य शरीर में नहीं वे भी मनुष्यों के समान ही ईश्वर पुत्र हैं। परन्तु ईसा के साथ जो अमानवीय व्यवहार उसके विरोधी लोगों ने किया वह सर्वथा अनुचित था। ईसा ने इस प्रकार का कोई अपराध परहानि आदि नहीं किया जिसके दण्ड स्वरूप उन्हें सूली पर चढ़ा दिया।

इंजील लूका रचित 4.10/आ. 19 में बताया कि ईसा मानता है कि केवल ईश्वर ही उत्तम है अन्य नहीं। ऋषि समीक्षा है कि जब ईसा ही एक अद्वितीय ईश्वर कहता है तो ईसाईयों ने पवित्रात्मा, पिता और पुत्र तीन कहां से बना लिए। ऋषियों ने ब्राह्मण ग्रन्थ, अन्य शास्त्र आदि स्वयं रचे हैं, जैसे सत्यार्थप्रकाश ऋषि दयानन्द की रचना है। अब ऐसे ही इंजील जो है वह

Scanned with CamScanner

हजरत ईसा की स्वयं की रचना नहीं है। जैनागम-बौद्धपिटक भी तीर्थंकर महावीर गोतम बुद्ध आदि की रचना नहीं है। बाद के लोगों ने संग्रह किया है। अब जब इंजील संग्रह ग्रन्थ है तो हो सकता है कि इसमें ईसा के अनेक मन्तव्य न आपायें हो, तथा अनेक मन्तव्य ईसा के नाम से इसमें लिख दिये गये हों एक व्यक्ति की मान्यताओं में विरोध नहीं हो सकता है। ईसा की यह मान्यता कि ईश्वर के तुल्य कोई नहीं हैं। इससे ही पता चलता है ईसा के विचार से शैतान बड़ा नहीं है ईश्वर से। परन्तु इंजील में जगह-जगह 'बाइबिल वर्णित ईश्वर' असहाय सिद्ध होता है शैतान के सामने। तो इस प्रकार के इंजील अंश जो हैं वे ईसा विचार के विरुद्ध हैं। यह भी शोध का विषय है कि बाइबल से मूल मान्यताएं जो ईसा की है उनको एकत्र किया जाये।

योहन रचित सुसमाचार 41/आ. 1/में संकेत है कि वचन (शब्द) से सृष्टि का सृजन हुआ है, उसमें जीवन था जो मनुष्यों का उजियाला था। ऋषि समीक्षा है कि वचन के द्वारा सृष्टि कभी नहीं हो सकती, जब तक उसका कारण न हो, जीवन किसमें क्या था ? इस वचन से जीवन अनादि मानोगे, जो अनादि है तो आदम के नथनों में सांस फूँकना झूँठा हुआ। सत्यार्थ-प्रकाश के आठवें समुल्लास में सृष्टि रचना के बारे में निर्भ्रान्त मान्यतायें चर्चित है। प्रकृति से ही विकार होकर यह सृष्टि बनती है।

क्या आसमान लपेटा जाता है ?

योहन प्रकाशित वाक्यों में भी असम्भव व सृष्टि नियम विरुद्ध गाथायें खूब हैं जैसे यो. प्र. 46/आ. 13 व 14 में कहा है कि तारे पृथिवी पर गिर पड़े, आकाश, पत्र (कागज) जैसे लपेटा जाता है। ऋषि समीक्षा है कि भला तारे सब भूगोल हैं एक पृथिवी

Scanned with CamScanner

पर कैसे गिर सकते हैं ओर सूर्य आदि का आकर्षण उनको इधर उधर क्यों आने जाने देगा ? क्या आकाश को चटाई के समान समझता है ? यह आकाश साकार पदार्थ नहीं जिनको कोई लपेटे या इकट्ठा कर सके तथा इसी के पर्व 9/आयत 1-5 में वर्णन है कि कथित ईश्वर के दूत ने हड्डी बूंकी-कूप खुला धुंआ उठा-टिड्डियाँ निकली. जिन लोगों के ईश्वर को छाप नहीं थी उनको टिड्डियां पीडित, करती रही। ऋषि समीक्षा है कि यह केवल भोले मनुष्यों को उनके ईसाई बना लेने का धोखा देना है कि जो तुम ईसाई न होगे तो तुमको टिड्डी काटेगी। विभिन्न मत वाले दूसरों को अपने मत में लाने का प्रयास करते हैं। सदाचार व सेवा की प्रेरणा से ऐसा हो तो ठीक है, अन्यथा भय-लोभ-छल आदि से अपने मत में लाना मनुष्यता नहीं है।

शैतान की करामात

यो. प्र. प. 12/आ. 9 में बताया है कि शैतान सारे संसार को भ्रमित करता है। ऋषि ससीक्षा का आशय यह है कि उस शैतान को कौन भ्रमित करता है। बाइबल वाले ईश्वर ने भ्रमित किया है तो यह ईश्वरत्व के विरुद्ध है, कारण कि जो वास्तविक ईश्वर है वह तो मनुष्य को संशय मुक्त करता है ज्ञान का प्रकाश देता है। बाइबल चर्चित ईश्वर शैतान से डरता भी है, कथित ईश्वर शैतान को दण्डित नहीं कर पाता हैं, इसलिए ही शैतान का अनुसरण अधिक दीखता है। अनेक मनुष्य दुराचारी नहीं होते है मिथ्याचारी होते हैं। उनकी इच्छा होती है गलत काम करने की परन्तु लोक लाज से नहीं करते हैं। प्रेरणा ग्रन्थों में जब उपर्युक्त प्रकार की गाथायें होती हैं उनके परिणाम से मिथ्याचारी मतानुयायी दुराचारी होने लगते हैं। मतों के उपदेशकों का काम है मिथ्याचारियों को भी सदाचारी बनाने का। परन्तु प्रेरणा

Scanned with CamScanner

ग्रन्थों में जब उपर्युक्त प्रकार की गाथायें होती हैं तो उस मत के उपदेशक व अनुयायी सबका ही आचरण गिरता है। यो. प्र. प. 12/स. 12 में भो बाइबल ईश्वर को शैतान के मुकाबले कमजोर वताया गया है।

कर्मफल की मान्यता

यो. प्र. प. 14/आ. 13 में बताया गया है कि कर्म जीवात्माओं के संग रहेंगे ऐसा ईश्वर कहता है। ऋषि समीक्षा है कि ईसाइयों का ईश्वर तो कहता है उनके कर्म उनके संग रहेंगे अर्थात् कर्मानुसार फल सबको दिये जायेंगे, और ये लोग [ईसाई उपदेशक आदि] कहते हैं कि ईसा पापों को ले लेगा और क्षमा भी किये जायेंगे, यहाँ बुद्धिमान विचारे कि ईश्वर का वचन सच्चा वा ईसाइयों का। कर्मानुसार ही फल मिलता है यह वैदिक सिद्धान्त है। दुष्कर्म व सुकर्म सबके फल तो भोगने ही होते है। किसी दुष्कर्म के कुफल को अन्य सुकर्म के सुफल से टाला नहीं जा सकता। जब कोई मनुष्य इस विचार को मानता है तो उसके व्यवहार में पर हानि आदि कभी नहीं होंगे। परन्तु चित्त में यह भ्रम है कि कितना ही कुकर्म करो क्षमा मिल जायेगी, तो मनुष्य अधिकाधिक दुष्ट कर्म करता है। मतों के उपदेशकों से दुष्ट कर्म रूक नहीं रहे हैं इसका कारण है भ्रमपूर्ण विचार।

यो. प्र. 4. 21/आ. 9 दुलहिन को दिखाने का संकेत है। वधू को ही देखा जाना चाहिए वर को क्यों नहीं ? महिला ईसाई उपदेशकों को चिन्ता होनी चाहिए कि बाइबल में स्थान स्थान पर स्त्री को द्वितीय श्रेणी का, कर्त्ता के बजाय कर्मरूप, भोक्ता के बजाय भाग्या क्यों बताया जाता है ?

यो. प्र. प. 21/आ. में संकेत है कि हर एक को कर्म के अनुसार फल दिया जाता है। ऐसे जो सत्य विचार है बाइबल में वे सारे वेद के अनुकूल हैं, तथा वेद से ही सत्य विचार बाइबल तक

Scanned with CamScanner

पहुंचा। ऋषि समीक्षा है कि जब यही बात है कि कर्मानुसार फल पाते हैं तो पापों की क्षमा कभी नहीं होती। तात्पर्य यह है कि जो भी दुष्कर्म करेगा उसे कुफल भोगना ही पड़ेगा।

आगे ऋषि बताते हैं कि सत्य तो वेदों के स्वीकार में गृहीत होता ही है। वेद की स्थिति सूर्य जैसी है। सूर्य के चारों ओर ही प्रकाश है। अंधकार दीया तले हो सकता है अन्य जो ग्रन्थ है वे दीपक समान हो सकते हैं सूर्य नहीं।



Scanned with CamScanner

आर्यसमाज के नियम

△ सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदिमूल परमेश्वर है।

△ ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

△ वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का परम धर्म है।

△ सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

△ सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करने करना चाहियें।

△ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

△ सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिये।

△ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

△ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी अन्नति समझनी चाहिये।

△ सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

Scanned with CamScanner

सुन्दर, सरल और सस्ते साहित्य प्रचार की योजना में सहयोग दीजिये

आर्य समाज के निष्ठावान विद्वान डा. सूर्यदेवजी की 12 हजार रुपयों की उदार सहायता के कारण आर्य समाज, अजमेर ने पचास हजार रुपये व्यय करके सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला के 15 भागों की 75 हजार प्रतियाँ लागत से भी कम मूल्य पर वितरित की है। इसी प्रकार इस ग्रन्थ माला के दूसरे संस्करण और आर्य समाज अजमेर द्वारा अपनी स्थापना तथा ऋषि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी के अवसर पर निम्न लिखित अत्यन्त उपयोगी साहित्य के लिये आप भी आर्थिक सहायता देकर उसके प्रचार में योगदान करें :—

1. स्व. लाला लाजपतराय की प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक—'दी आर्य समाज' का पहली बार प्रकाशित होने वाला हिन्दी संस्करण। अनुवादक—डा. भवानी लाल भारतीय।

2. आर्य समाज—हिन्दु विदाऊट हिन्दुइज्म—(The Arya Samaj Hindu without Hinduism) प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक। प्रकाशक विकास द्वारा मुद्रित। प्रिन्सिपल दत्तात्रेय बाब्ले द्वारा लिखित क्रान्तिकारी मौलिक अंग्रेजी ग्रन्थ।

3. सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला का दूसरा संस्करण।

4. इसी ग्रन्थ माला के समान ऋषि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में हिन्दी अंग्रेजी के ट्रेक्टस।

5. स्वामीजी के पत्र व्यवहार पर आधारित उनके कार्य और विचारों का संकलन।

Scanned with CamScanner

6. आर्य समाज अजमेर के गत 100 वर्षों का इतिहास जिससे ऋषि दयानन्द के अन्तिम वर्षों से सम्बन्धित समाज के अभिलेखों से प्राप्त विवरण।

(2) उपरोक्त प्रकाशन में आर्थिक सहायता देने वाले सज्जनों के सम्बन्ध में प्रत्येक पुस्तक में निम्न प्रकार से उनके प्रति आभार व्यक्त किया जावेगा :—

(1) एक सौ रुपये से पांच सौ रुपये तक दान दाताओं के नामों का उल्लेख।

(2) 500 रुपये से 3000 रुपये तक देने वाले दाताओं का संक्षिप्त परिचय।

(3) तीन हजार से ऊपर देने वाले दान दाताओं का चित्र और परिचय।

दयानन्द स्नातकोत्तर कालेज अजमेर में दयानन्द शोध तथा प्रकाशन संस्था के लिये 500 रुपये या अधिक दान दाताओं के नाम प्रत्येक प्रकाशन तथा शिला लेखों में अंकित किया जावेगा।

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई

आचार्य धर्मवीर आर्य

सम्पर्क — 9029421718

Scanned with CamScanner